उत्तर आधुनिकता और अमरकांत का कहानी साहित्य

*मुध सैन

उत्तर आधुनिकता और अमरकांत का कहानी साहित्य–

सामान्यतः उत्तर आधुनिकता शब्द आधुनिकता के अर्थ के संदर्भ में ही इंगित करता है। जैसे मध्यकाल को दो भागों में विभक्त किया गया है पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल ठीक वैसे ही आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता को लिया जा सकता है। मूलतः आधुनिकता शब्द के पूर्व में उत्तर शब्द को जोड़कर उत्तर आधुनिकता शब्द बनाया गया है।

यद्यपि आधुनिकता ने पूरे विश्व में मानव जीवन को अविवेक और अज्ञानता से मुक्त किया और उसे बौद्धिक और ज्ञान के धरातल पर स्थापित किया किन्तु विश्वयुद्धों के बाद कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं जिनका समाधान आधुनिकता के दौर में नही था जैसे– मशीनीकरण, आर्थिक विकास, भौतिक विकास, संस्कृति परिवर्तन आदि ने मानव जीवन को कई अन्तर्विरोधो में जकड़ दिया। परिणाम यह हुआ कि आधुनिकता से लोग ऊभरने लगें और उत्तर आधुनिकता का मार्ग प्रशस्त हुआ। समाज, साहित्य, संस्कृति सभ्यता, दर्शन, सिनेमा अर्थव्यवस्था तथा मानव मूल्यों में जो परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं वह उत्तर आधुनिकता की ही देन है।

उत्तर आधुनिकता कोई एक सिद्धांत नही बल्कि अनेक सिद्धांतों का एक नाम है। यह एक ऐसा वाद है जो "एक स्थिति या दशा की तरह है जो लगातार अस्थिर है, चंचल है, विखंडशील है"।

उत्तर आधुनिकतावाद 20वीं भाताब्दी के दूसरे भाग में दर्शन शास्त्र कला वास्तुशास्त्र और आलोचना के क्षेत्रों में फैला एक सांस्कृतिक आन्दोलन था जिसने अपने से पहले प्रचलित आधुनिकतावाद को चुनौती दी और सांस्कृतिक वातावरण को बदल डाला। उत्तर आधुनिकता आधुनिक काल की शाश्वता को खंडित करती है। उसके अनुसार कोई विचार दर्शन शाश्वत पूर्ण अंतिम और स्थायी नही है सब कुछ अनिश्चित और अस्थिर है। हर अवधारणा एक भ्रम है। उत्तर आधुनिकता अंग्रेजी के Post Modernity का हिन्दी अनुवाद है जिसका प्रयोग सम्भवतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आधुनिकता के अंत की घोषणा के पश्चात् हुआ। Post का अर्थ है बाद में किसी भी शब्द के साथ जब हम उत्तर शब्द का प्रयोग करते हैं तो इससे दो अर्थो का अनुमान लगाया जा सकता है –एक तो उस शब्द में निहित था उसके द्वारा व्यंजित पूर्व स्थिति जो अब नही रह गई है और उसके स्थान पर कोई नई स्थिति उभरकर सामने आयी है। या यह कहे कि उत्तर स्थिति पूर्व स्थिति का अगला चरण या विस्तार है। "उत्तर आधुनिकता के सूत्रों को समझे बिना हम अपने स्वयं को नही समझ सकते, क्योंकि हमारे न चाहने पर भी वह हमारे बोध में सक्रिय है। हमारी 'आक–भू' से वह नष्ट नही होने वाली"।

उत्तर आधुनिकता को स्पष्ट करते हुए डॉ. सुधीश पचौरी का यह कथन "आस्वस्थ सुरक्षित और आरक्षित संस्कृति में सूधीजनों की चैन हराम है कि यह उत्तर आधुनिकता क्या बला है? अनेक ने बिना पढ़े जाने उसे शाप दिये है। कुछ लोग चाहते है कि उत्तर आधुनिकता की एक मुश्त परिभाषा हो जाये और बच्चों को आसानी हो जाये कि वे पश्नोत्तरी कर सकें"।

उत्तर आधुनिकता को स्पष्ट करने के लिए इतना ही कहा जा सकता है कि यह आधुनिकता का अगला चरण है। उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता से अलग परिभाषित नही किया जा सकता ।

इस सम्बन्ध में देवेन्द्र इस्सर का मत है कि – "20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाज संस्कृति, अर्थव्यवस्था राजनीति तथा कला , संगीत, वास्तुशास्त्र साहित्य और चिंतन में जो परिवर्तन आये हैं, उत्तर आधुनिकता उसको परिलक्षित करने वाला एक व्यापक लेकिन विवादस्पद परिभाषित शब्द है"।

अमरकांत का कहानी साहित्य :– अमरकांत प्रेमचंद की परम्परा के लेखक हैं उन्होंने अपनी कहानी कला में जीवन के निम्न मध्यवर्गीय जन–जीवन नारी जीवन और नारी जीवन की मार्मिकता और संवेदनशीलता को बड़ी ही स्पष्टता से प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियॉ कही ठेठ ग्रामीण जीवन की आँचलिकता को उजागर करती हैं तो कहीं महानगरीय पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। किन्तु दोनों ही स्थितियों में मूल रूप से मानवीय चेतना का स्वर मुखरित किया है। उसे कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त करने की अदभूद कला अमरकांत में दिखाई देती है। यद्यपि कहानीकार अमरकांत सामाजिक चेतना और यथार्थवादी कहानीकारों में से एक हैं। उनके लिए साहित्य न तो कभी व्यवसाय रहा और न ही कोरे मनोरंजन का आधार, उन्होनें साहित्य को सदैव मानवतावादी परम्परा के अनुरूप एक साधन माना है।

आज के उत्तर आधुनिक युग में वैज्ञानिक उपलब्धियों और परिवर्तित होते सांस्कृतिक वातावरण के फलस्वरूप मानव जीवन में निजी प्रकृति से हटकर कुछ विकृतियों का समावेश हो गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य को पश्चिम के विविध आन्दोलन और उनसे उत्पन्न स्थितियों ने पूर्ण प्रभावित किया है किन्तु अमरकांत के कहानी साहित्य पर इन आन्दोलनों का कोई प्रभाव परिलक्षित नही होता। आपकी कहानी साहित्य यात्रा के बढ़ते चरण भिन्न–भिन्न भाब्दों का निर्माण करके भी निम्न मध्यम वर्गीय एवं समाज में शोषित उपेक्षित असहाय आदि की संवेदना से अलग नही हुए। इसी से आपकी कहानियों में समय के साथ जहां एक ओर मौलिकता, नवीन आग्रह एवं नये समाज की रचना का संदेश है वहीं नित नूतन शिल्प का भी समावेश हुआ है। कहानीकार अमरकांत के कहानी साहित्य में भारतीय जीवन की झलक दृष्टिगत होती है। आपकी कहानियो में वह परिवेश चित्रित होता है जो सामान्यतः हमारे आस–पास के वातावरण में दृष्टिगत होता है। वस्तुतः रचनात्मकता, जीवन्तता और वैचारिकता, सक्रियता जो नयी कहानी ने आरम्भ किया उसकों ध्यान में रखते हुये कहानीकार अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से अनेक अहम प्रश्नों को अनबूझ पहेलियों को हल करने का प्रयास किया है साथ ही हिन्दी कहानी को एक रचनात्मक दिशा प्रदान की है। उनके कहानी संग्रहों में जिन्दगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, तूफान, कला प्रेमी, प्रतिनिधि कहानियाँ, एक धनी व्यक्ति का बयान, औरत का क्रोध, सुख और दुःख का साथ, जाँच और बच्चे उल्लेखनीय है।

कहानीकार अमरकांत की कहानियों का विषय सम्बन्धों में अर्थ का प्रभाव शोषित और निर्धन वर्ग की कठिनाईयों को उजागर करना ही रहा बल्कि उन कठिनाईयों से निजात पाने के उपायों की ओर भी पाठक वर्ग को सोचने को विवश करना रहा है। जैसे जिंदगी और जोंक अमरकांत की बहुचर्चित कहानियों में से एक रही है। जिसमें रजुआ पात्र के माध्यम से अमरकांत ने हास्य व्यंग का पुट देते हुए बडी ही सादगी से जीवन के सत्य को प्रतिश्ठित किया है। आदमी जोंक है या जीवन स्वयं जो कौन किसका रक्त चूस रहा है ? इन सभी परिस्थितियों को कहानीकार अमरकांत ने बडे ही स्वाभाविक ढ़ंग से उजागर किया है। इसी प्रकार 'डिप्टी कलेक्टरी' दोपहर का भोजन', हत्यारें, मौत का नगर, मूस असमर्थ हिलता हाथ, नौकर, बहादुर, आदि बडी ही स्वाभाविक और जीवनोन्मुख कहानियाँ है। सहज सरल कलेवर में लिपटी ये कहानियॉ जीवन की घनघोर जटिलताऐं व्यक्त करती हैं।

निष्कर्ष :– कहा जा सकता है कि अमरकांत की कहानी यात्रा के विविध सोपान हैं। इसमें कहानीकार ने विविध

विषय स्थिति एवं संदर्भो को विविध रूपो में प्रस्तुत किया है। कहानीकार सामाजिक विसंगतियों पर करारी चोट की है। साथ ही उत्तर आधुनिक कालीन परिस्थितियों और बदलते परिवेश से सम्बन्धित मानव को समस्त सामाजिक अन्तर्विरोधों सहित लेखक ने पूर्ण रूप से पहचान लिया है साथ ही बदलते सामाजिक परिवेश में स्त्री के प्रति बदलते मूल्यों को रेखांकित किया है।

***हिन्दी विभाग**
सिंघानिया विश्वविद्यालय
पचेरी बड़ी, झुंझुनू (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. डॉ. सुधीर पचौरी – उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ. कृश्णदत्त पालीवाल – उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
3. सुधीर पचौरी उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
4. देवेन्द्र इस्सर – साहित्य सिद्धान्त और समालोचना नई दिल्ली।
5. अमरकांत की प्रतिनिधि कहानियाँ
6. अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियां भाग–1
7. अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियां भाग–2